एक दल के प्रभुत्व का दौर

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती

प्रश्न 1 (आसान). आज़ादी के बाद भारत के नेताओं ने राजनीति को किस रूप में देखा?
उत्तर – समस्या के समाधान के रूप में।

प्रश्न 2 (आसान). शुरुआती चुनावों में कितने प्रतिशत मतदाता साक्षर थे?
उत्तर – लगभग 15 प्रतिशत।

प्रश्न 3 (मध्यम). कई नव-स्वतंत्र देशों ने लोकतंत्र क्यों नहीं अपनाया?
उत्तर – उन्होंने राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता दी और सोचा कि लोकतंत्र से मतभेद बढ़ेंगे।

प्रश्न 4 (कठिन). भारत में सार्वभौम मताधिकार का प्रयोग 'इतिहास का सबसे बड़ा जुआ' क्यों कहा गया?
उत्तर – क्योंकि उस समय तक लोकतंत्र केवल धनी देशों में था और भारत जैसे गरीब व अशिक्षित बहुल देश में सबको वोट का अधिकार देना एक बहुत बड़ा और अनिश्चित प्रयोग था।

» भारत के पहले आम चुनाव का आयोजन

प्रश्न 5 (आसान). भारत में चुनाव आयोग का गठन कब हुआ?
उत्तर – जनवरी 1950

प्रश्न 6 (आसान). भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त कौन थे?
उत्तर – सुकुमार सेन

प्रश्न 7 (मध्यम). पहले आम चुनाव को 1950 में क्यों नहीं आयोजित किया जा सका?
उत्तर – देश का विशाल आकार, बड़ी संख्या में निरक्षर मतदाता, और मतदाता-सूची तैयार करने जैसे बड़े कामों में बहुत समय लगा, इसलिए यह 1951-52 में आयोजित हुआ।

प्रश्न 8 (कठिन). पहले आम चुनाव के समय सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को लागू करना दुनिया के लिए एक अनूठी मिसाल क्यों था?
उत्तर – उस समय यूरोप जैसे कई विकसित देशों में भी महिलाओं को मताधिकार नहीं मिला था, जबकि भारत जैसे नव-स्वतंत्र, गरीब और बड़े पैमाने पर निरक्षर देश ने सभी वयस्कों को मतदान का अधिकार दिया, जो लोकतंत्र के प्रति भारत की गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

» मतदान के बदलते तरीके

प्रश्न 9 (आसान). ईवीएम का इस्तेमाल भारत में कब से शुरू हुआ?
उत्तर – 1990 के दशक के अंत में।

प्रश्न 10 (आसान). भारत के शुरुआती चुनावों में कितनी मतपेटियों का इस्तेमाल हुआ था?
उत्तर – तकरीबन 20 लाख स्टील के बक्सों का।

प्रश्न 11 (मध्यम). पहले दो चुनावों के बाद मतदान के तरीके में क्या बदलाव आया?
उत्तर – पहले दो चुनावों के बाद, हर उम्मीदवार का नाम और चुनाव-चिह्न एक ही मतपत्र पर अंकित होने लगा। मतदाता को इस मतपत्र पर अपने पसंद के उम्मीदवार के नाम पर मुहर लगानी होती थी।

प्रश्न 12 (कठिन). भारत के शुरुआती चुनावों में हर उम्मीदवार के लिए अलग मतपेटी क्यों रखी जाती थी?
उत्तर – यह तरीका इसलिए अपनाया गया था क्योंकि भारत की ज़्यादातर आबादी उस समय अनपढ़ थी। हर उम्मीदवार के लिए अलग बक्सा और उस पर चुनाव-चिह्न होने से अनपढ़ मतदाताओं के लिए भी अपनी पसंद का उम्मीदवार चुनना और वोट डालना आसान हो जाता था।

» पहले आम चुनाव (1952) का महत्व

प्रश्न 13 (आसान). भारत का पहला आम चुनाव किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1952 में।

प्रश्न 14 (आसान). पहले आम चुनाव के समय कितने प्रतिशत मतदाता साक्षर थे?
उत्तर – लगभग 15%।

प्रश्न 15 (मध्यम). पहले आम चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण पहलू क्या था जिसने इसे अनूठा बनाया?
उत्तर – सार्वभौम वयस्क मताधिकार का प्रयोग, जिसमें हर वयस्क नागरिक को, चाहे वह पढ़ा-लिखा हो या नहीं, वोट देने का अधिकार दिया गया।

प्रश्न 16 (कठिन). पहले आम चुनाव की सफलता ने दुनिया को लोकतंत्र के बारे में क्या संदेश दिया?
उत्तर – इसने यह संदेश दिया कि लोकतंत्र केवल अमीर या विकसित देशों की व्यवस्था नहीं है, बल्कि भारत जैसे एक बड़े, गरीब और नव-स्वतंत्र देश में भी यह सफलतापूर्वक स्थापित किया जा सकता है, जिससे दुनिया के अन्य देशों को प्रेरणा मिली।

» पहले तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व

प्रश्न 17 (आसान). कांग्रेस पार्टी ने किन तीन आम चुनावों में प्रभुत्व दिखाया?
उत्तर – 1952, 1957 और 1962 के आम चुनावों में।

प्रश्न 18 (आसान). पहले तीन चुनावों में कांग्रेस के प्रभुत्व का एक मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – स्वतंत्रता संग्राम की विरासत या जवाहरलाल नेहरू का करिश्माई नेतृत्व।

प्रश्न 19 (मध्यम). 1952 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को कितने प्रतिशत वोट मिले थे, और उसे सीटों का कितना प्रतिशत मिला?
उत्तर – कांग्रेस को कुल वोटों का लगभग 45% मिला था, लेकिन उसे 74% सीटें मिली थीं।

प्रश्न 20 (कठिन). कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व को समझने में 'सर्वाधिक वोट पाने वाले की जीत' प्रणाली कैसे मदद करती है? एक उदाहरण से समझाओ।
उत्तर – इस प्रणाली में, जिसे दूसरों से थोड़े ज़्यादा वोट मिलते हैं, उसे सीटों का कहीं ज़्यादा अनुपात मिल जाता है। जैसे 1952 में कांग्रेस को 45% वोट पर 74% सीटें मिलीं, क्योंकि बाकी पार्टियों के वोट आपस में बँट गए थे, जिससे कांग्रेस भले ही सबको मिलाकर बहुमत में ना हो, फिर भी सबसे ज़्यादा सीट ले गई।

» केरल में कम्युनिस्टों की जीत और विवादास्पद बर्खास्तगी

प्रश्न 21 (आसान). केरल में किस साल कम्युनिस्ट पार्टी ने विधानसभा चुनाव जीते थे?
उत्तर – 1957

प्रश्न 22 (आसान). केंद्र की कांग्रेस सरकार ने केरल की कम्युनिस्ट सरकार को किस वर्ष बर्खास्त किया?
उत्तर – 1959

प्रश्न 23 (मध्यम). केरल की कम्युनिस्ट सरकार को बर्खास्त करने के लिए संविधान के किस अनुच्छेद का उपयोग किया गया था?
उत्तर – अनुच्छेद 356

प्रश्न 24 (कठिन). केरल में कम्युनिस्टों की जीत को एक 'अपवाद' क्यों माना गया था?
उत्तर – क्योंकि उस समय पूरे देश में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व था और यह पहली बार था कि किसी राज्य में कांग्रेस को हराकर किसी अन्य पार्टी ने सरकार बनाई थी, खासकर एक कम्युनिस्ट पार्टी ने, और वह भी लोकतांत्रिक तरीके से।

» कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति

प्रश्न 25 (आसान). भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व किस माध्यम से स्थापित हुआ?
उत्तर – लोकतांत्रिक चुनावों द्वारा।

प्रश्न 26 (आसान). अन्य किन देशों में एक-दलीय प्रभुत्व पाया जाता है जहाँ सिर्फ एक पार्टी को अनुमति है?
उत्तर – चीन, क्यूबा, सीरिया।

प्रश्न 27 (मध्यम). भारत और चीन के एक-दलीय प्रभुत्व में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व लोकतांत्रिक और चुनाव-आधारित था, जबकि चीन में कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभुत्व संवैधानिक रूप से अनिवार्य है।

प्रश्न 28 (कठिन). दक्षिण अफ्रीका के अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के प्रभुत्व की तुलना भारत की कांग्रेस के प्रभुत्व से क्यों की जाती है?
उत्तर – दोनों देशों में, संबंधित पार्टियों ने लोकतांत्रिक स्थितियों में, जनता के समर्थन से एक बड़ा जनादेश हासिल किया, न कि किसी कानूनी या सैन्य प्रतिबंध के कारण।

» कांग्रेस एक सामाजिक और विचारधारात्मक गठबंधन के रूप में

प्रश्न 29 (आसान). कांग्रेस को सामाजिक गठबंधन क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि इसमें समाज के विभिन्न वर्ग, जाति, धर्म और भाषा के लोग शामिल थे।

प्रश्न 30 (आसान). कांग्रेस में किन-किन विचारधाराओं के लोग थे?
उत्तर – क्रांतिकारी, शांतिवादी, गरमपंथी, नरमपंथी, वामपंथी और दक्षिणपंथी जैसे विभिन्न विचारधाराओं के लोग थे।

प्रश्न 31 (मध्यम). कांग्रेस के 'सामाजिक गठबंधन' होने से उसकी ताकत कैसे बढ़ी?
उत्तर – इससे कांग्रेस की पहुंच समाज के हर वर्ग तक हो गई, उसे व्यापक समर्थन मिला और वह भारत की विविधता का प्रतिनिधित्व कर पाई, जिससे उसकी वैधता और स्वीकार्यता बढ़ी।

प्रश्न 32 (कठिन). क्या कांग्रेस में सभी समूहों की पहचान पूरी तरह से खत्म हो जाती थी? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – नहीं, हमेशा नहीं। कुछ समूहों ने अपनी पहचान को कांग्रेस के साथ मिला दिया, लेकिन कई बार समूह अपनी पहचान और विश्वासों को बनाए रखते हुए भी कांग्रेस के भीतर एक व्यक्ति या समूह के रूप में बने रहे। कांग्रेस एक ऐसा मंच थी जहाँ विभिन्न समूह अपने मतभेदों के बावजूद राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते थे और पार्टी उन्हें समाहित कर लेती थी।

» गुटों में तालमेल और सहनशीलता (कांग्रेस प्रणाली)

प्रश्न 33 (आसान). कांग्रेस पार्टी के भीतर विभिन्न समूहों को क्या कहा जाता था?
उत्तर – गुट (factions)

प्रश्न 34 (आसान). कांग्रेस की गुटबाजी उसकी कमजोरी थी या ताकत?
उत्तर – ताकत

प्रश्न 35 (मध्यम). अगर कांग्रेस में गुटों में तालमेल और सहनशीलता न होती तो क्या होता?
उत्तर – पार्टी कमजोर हो जाती, लोग उसे छोड़कर नई पार्टियाँ बनाते और कांग्रेस का प्रभुत्व कम हो जाता।

प्रश्न 36 (कठिन). कांग्रेस प्रणाली में 'सहनशीलता' का क्या महत्व था? उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तर – सहनशीलता का मतलब था कि कांग्रेस अपने अंदर मौजूद अलग-अलग विचारधाराओं और नेताओं की महत्त्वाकांक्षाओं को स्वीकार करती थी। जैसे, एक ही पार्टी में समाजवादी सोच वाले भी थे और दक्षिणपंथी सोच वाले भी। पार्टी उन्हें बाहर निकालने की बजाय, उनकी बातों को भी सुनती थी और उन्हें एडजस्ट करती थी। इससे सभी समूह पार्टी के भीतर ही संतुष्ट रहते थे और बाहर जाकर विपक्ष में शामिल होने की जरूरत महसूस नहीं करते थे।

» प्रमुख विपक्षी दलों का उद्भव: सोशलिस्ट पार्टी (एसपी)

प्रश्न 37 (आसान). सोशलिस्ट पार्टी ने किस विचारधारा को अपनाया?
उत्तर – लोकतांत्रिक समाजवाद।

प्रश्न 38 (आसान). सोशलिस्ट पार्टी के किन्हीं दो नेताओं के नाम बताओ।
उत्तर – आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण।

प्रश्न 39 (मध्यम). सोशलिस्ट पार्टी शुरू में किस दल का हिस्सा थी और बाद में क्यों अलग हुई?
उत्तर – सोशलिस्ट पार्टी शुरू में कांग्रेस के अंदर 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' के रूप में थी। वे कांग्रेस की नीतियों से संतुष्ट नहीं थे और मानते थे कि कांग्रेस समाजवाद को पूरी तरह से लागू नहीं कर रही है, इसलिए बाद में अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी बनी।

प्रश्न 40 (कठिन). आज़ादी के बाद सोशलिस्ट पार्टी को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा और क्या यह कांग्रेस के प्रभुत्व को चुनौती दे पाई?
उत्तर – आज़ादी के बाद सोशलिस्ट पार्टी को कांग्रेस के विशाल जनाधार और उसके नेताओं की लोकप्रियता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वे अपनी समाजवादी विचारधारा को प्रभावी ढंग से जनता तक पहुँचाने में सफल नहीं हो पाए और लगातार कई चुनावों में सीटें नहीं जीत पाए। हाँ, उन्होंने कांग्रेस की नीतियों पर सवाल उठाकर उसे चुनौती देने की कोशिश ज़रूर की, लेकिन अपने बिखरने और स्पष्ट नेतृत्व की कमी के कारण कांग्रेस के प्रभुत्व को निर्णायक रूप से कम नहीं कर पाए।

» प्रमुख विपक्षी दलों का उद्भव: कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई)

प्रश्न 41 (आसान). सीपीआई के उद्भव का मुख्य प्रेरक क्या था?
उत्तर – रूस की बोल्शेविक क्रांति

प्रश्न 42 (आसान). सीपीआई ने किस क्षेत्र में ज़मींदारी प्रथा के खिलाफ विद्रोह का समर्थन किया?
उत्तर – तेलंगाना

प्रश्न 43 (मध्यम). सीपीआई का विभाजन किस वर्ष हुआ और यह किन दो दलों में बँटी?
उत्तर – 1964 में, CPI और CPI-M में

प्रश्न 44 (कठिन). बोल्शेविक क्रांति ने सीपीआई की विचारधारा को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – बोल्शेविक क्रांति में मज़दूरों और किसानों की सरकार बनी थी, जिससे प्रेरित होकर सीपीआई ने भी भारत में शोषित वर्ग (मज़दूर, किसान) के हक़ और उनके शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई।

» प्रमुख विपक्षी दलों का उद्भव: भारतीय जनसंघ (बीजेएस)

प्रश्न 45 (आसान). भारतीय जनसंघ की स्थापना किस वर्ष हुई?
उत्तर – 1951

प्रश्न 46 (आसान). भारतीय जनसंघ के संस्थापक का नाम बताओ।
उत्तर – श्यामा प्रसाद मुखर्जी

प्रश्न 47 (मध्यम). भारतीय जनसंघ की मुख्य विचारधारा क्या थी? संक्षेप में बताओ।
उत्तर – भारतीय जनसंघ की मुख्य विचारधारा 'एक देश, एक संस्कृति, एक राष्ट्र' थी। यह अखंड भारत और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन करती थी।

प्रश्न 48 (कठिन). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का भारतीय जनसंघ से क्या संबंध था, और इसका क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) भारतीय जनसंघ से बहुत गहरे से जुड़ा हुआ था। जनसंघ के कई नेता और कार्यकर्ता आरएसएस से आए थे, और इसकी विचारधारा पर भी आरएसएस का गहरा प्रभाव था। इसने जनसंघ को एक मजबूत संगठनात्मक आधार और एक स्पष्ट राष्ट्रवादी दिशा दी।

» विपक्षी पार्टियों की भूमिका और महत्व

प्रश्न 49 (आसान). आजादी के शुरुआती सालों में किस पार्टी का प्रभुत्व था?
उत्तर – कांग्रेस पार्टी का

प्रश्न 50 (आसान). क्या उस समय भारत में विपक्षी पार्टियां मौजूद थीं?
उत्तर – हाँ, विपक्षी पार्टियां मौजूद थीं, लेकिन उनकी सीटें कम थीं।

प्रश्न 51 (मध्यम). विपक्षी दलों की एक महत्वपूर्ण भूमिका बताएं, भले ही वे चुनाव न जीत पाए हों।
उत्तर – उन्होंने सरकार की नीतियों और व्यवहारों की आलोचना करके लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाए रखा।

प्रश्न 52 (कठिन). शुरुआती दौर में कांग्रेस और विपक्षी दलों के नेताओं के बीच किस तरह का संबंध था?
उत्तर – शुरुआती दौर में उनके बीच गहरा पारस्परिक सम्मान का भाव था, और कभी-कभी विपक्षी नेताओं को अंतरिम सरकार में भी शामिल किया जाता था।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. आज़ादी के बाद भारत के सामने लोकतंत्र स्थापित करने की मुख्य चुनौतियाँ क्या थीं?

› पहला कदम था, राष्ट्र-निर्माण की चुनौती को समझना - यानी देश को एक साथ जोड़े रखना, अलग-अलग धर्म, भाषा, संस्कृति के लोगों को एक करना।

› दूसरा कदम, कई अन्य देशों ने अलोकतांत्रिक शासन प्रणालियां अपनाई थीं (जैसे तानाशाही या एक ही पार्टी का शासन), भारत के सामने भी यह विकल्प था।

› तीसरा कदम, भारत के नेताओं ने जानबूझकर लोकतंत्र का कठिन रास्ता चुना, क्योंकि वे मानते थे कि राजनीति समस्याओं का समाधान है, न कि समस्या।

› चौथा कदम, संविधान ने नियम तय कर दिए थे, पर उन्हें ज़मीन पर उतारना, जैसे कि चुनाव करवाना, बहुत मुश्किल था क्योंकि 17 करोड़ मतदाताओं में से केवल 15% ही साक्षर थे।

› पाँचवाँ कदम, इतने बड़े पैमाने पर, गरीब और अनपढ़ आबादी के साथ, सार्वभौम वयस्क मताधिकार (सबको वोट का अधिकार) लागू करना अपने आप में एक बहुत बड़ा और जोखिम भरा प्रयोग था।

उत्तर – भारत के सामने राष्ट्र-निर्माण, अलोकतांत्रिक रास्तों से बचकर लोकतांत्रिक शासन प्रणाली अपनाने, और एक विशाल, अशिक्षित आबादी के बीच सार्वभौम मताधिकार पर आधारित निष्पक्ष चुनाव करवाने की बड़ी चुनौतियाँ थीं।

उदाहरण 2. भारत के पहले आम चुनाव के आयोजन में चुनाव आयोग के सामने क्या प्रमुख चुनौतियाँ थीं?

› पहला कदम: जनवरी 1950 में भारत के चुनाव आयोग का गठन किया गया और श्री सुकुमार सेन को पहला मुख्य चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया।

› दूसरा कदम: देश का विशाल भौगोलिक आकार एक बड़ी चुनौती था, जहाँ दूर-दराज के इलाकों में भी मतदान कराना था।

› तीसरा कदम: उस समय लगभग 17 करोड़ मतदाता थे और उनमें से केवल 15% ही साक्षर थे। निरक्षरता के कारण लोगों को मतदान प्रक्रिया समझाना कठिन था।

› चौथा कदम: चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन करना यानी किस इलाके से कौन उम्मीदवार खड़ा होगा और मतदाता-सूची बनाना भी एक बहुत बड़ा काम था। शुरुआत में 40 लाख महिलाओं के नाम 'किसी की बेटी' या 'किसी की पत्नी' के तौर पर दर्ज थे, जिन्हें चुनाव आयोग ने मानने से इनकार कर दिया और सही जानकारी के लिए दोबारा प्रयास करने पड़े।

उत्तर – भारत के पहले आम चुनाव के आयोजन में विशाल आकार, निरक्षरता, विशाल मतदाता संख्या, और मतदाता-सूची बनाने की जटिलता जैसी कई बड़ी चुनौतियाँ थीं।

उदाहरण 3. भारत के पहले आम चुनाव (1952) में वोट डालने का तरीका क्या था?

› पहला कदम: हमें यह याद रखना होगा कि भारत के पहले चुनाव में चुनौतियाँ बहुत थीं, जैसे बड़ी आबादी और कम पढ़े-लिखे लोग।

› दूसरा कदम: इसलिए, चुनाव आयोग ने एक आसान तरीका अपनाया जहाँ हर उम्मीदवार के लिए एक अलग मतपेटी (बक्सा) थी।

› तीसरा कदम: मतदाता को एक खाली मतपत्र दिया जाता था।

› चौथा कदम: मतदाता अपनी पसंद के उम्मीदवार की मतपेटी में वह खाली मतपत्र डालता था।

› पाँचवाँ कदम: मतपेटी पर उम्मीदवार का चुनाव-चिह्न बना होता था ताकि अनपढ़ लोग भी आसानी से पहचान सकें।

उत्तर – भारत के पहले आम चुनाव (1952) में, प्रत्येक उम्मीदवार के लिए एक अलग मतपेटी (बक्सा) होती थी जिस पर उसका चुनाव-चिह्न बना होता था। मतदाता को एक खाली मतपत्र मिलता था जिसे वह अपनी पसंद के उम्मीदवार की मतपेटी में डालता था।

उदाहरण 4. 1952 के पहले आम चुनाव को दुनिया के लोकतंत्रों के लिए मील का पत्थर क्यों माना जाता है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि भारत 1947 में आज़ाद हुआ था और तब तक कई नए आज़ाद हुए देश लोकतंत्र नहीं अपना पाए थे।

› दूसरा कदम: भारत ने यूनिवर्सल एडल्ट फ्रैंचाइजी (सार्वभौम मताधिकार) को अपनाया, यानी हर वयस्क नागरिक को वोट का अधिकार दिया, चाहे उसकी शिक्षा या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। यह उस समय के लिए एक क्रांतिकारी कदम था।

› तीसरा कदम: चुनाव आयोग ने करीब 17 करोड़ मतदाताओं के लिए, जिनमें से सिर्फ 15% साक्षर थे, 3 लाख से ज़्यादा कर्मचारियों को प्रशिक्षित करके एक स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करवाया।

› चौथा कदम: इस विशालकाय और जटिल प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा करना यह साबित करता है कि लोकतंत्र सिर्फ अमीर या विकसित देशों के लिए नहीं है, बल्कि भारत जैसे विकासशील देश में भी यह संभव है।

› पांचवा कदम: इसी सफलता ने दुनिया भर के उन देशों को उम्मीद दी जो अभी भी अपनी लोकतांत्रिक यात्रा शुरू करने में हिचकिचा रहे थे।

उत्तर – 1952 का पहला आम चुनाव इसलिए मील का पत्थर था क्योंकि भारत ने सार्वभौम मताधिकार के साथ एक विशाल और विविधतापूर्ण आबादी में स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव सफलतापूर्वक संपन्न करके यह साबित किया कि लोकतंत्र किसी भी देश में संभव है, भले ही उसकी परिस्थितियां कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों।

उदाहरण 5. पहले आम चुनाव (1952) में कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा की कुल 489 सीटों में से कितनी सीटें जीतीं और इससे हमें क्या पता चलता है?

› पहला आम चुनाव 1952 में हुआ था।

› लोकसभा की कुल सीटें 489 थीं।

› कांग्रेस पार्टी ने इनमें से 364 सीटें जीती थीं।

› इससे पता चलता है कि कांग्रेस ने भारी बहुमत हासिल किया, जो कुल सीटों का लगभग तीन-चौथाई था, और किसी भी विपक्षी पार्टी से कहीं आगे थी।

उत्तर – कांग्रेस पार्टी ने 364 सीटें जीतीं। इससे पता चलता है कि पहले चुनाव में कांग्रेस का प्रभुत्व बहुत स्पष्ट था, जो अन्य पार्टियों से काफी आगे था।

उदाहरण 6. प्रश्न: 1957 में केरल में कम्युनिस्ट सरकार बनने की मुख्य विशेषताएं क्या थीं और इसे कब और किस अनुच्छेद के तहत बर्खास्त किया गया?

› पहला चरण: 1957 में केरल में विधानसभा चुनाव हुए, जिसमें भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) को सबसे ज़्यादा सीटें मिलीं.

› दूसरा चरण: CPI ने कुछ स्वतंत्र उम्मीदवारों के समर्थन से सरकार बनाई. यह दुनिया में पहली बार था जब लोकतांत्रिक चुनावों के ज़रिए कोई कम्युनिस्ट सरकार सत्ता में आई.

› तीसरा चरण: कांग्रेस पार्टी, जो केरल में सत्ता से बाहर हो गई थी, उसने सरकार के खिलाफ 'मुक्ति संघर्ष' चलाया.

› चौथा चरण: 1959 में, केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 356 का इस्तेमाल करके केरल की इस कम्युनिस्ट सरकार को बर्खास्त कर दिया.

› पांचवां चरण: यह फैसला बहुत विवादास्पद साबित हुआ क्योंकि एक चुनी हुई सरकार को केंद्र ने हटा दिया था.

उत्तर – 1957 में केरल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की अगुवाई में लोकतांत्रिक तरीके से सरकार बनी, जो दुनिया में ऐसी पहली सरकार थी। इसे 1959 में केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 356 के तहत विवादास्पद तरीके से बर्खास्त कर दिया।

उदाहरण 7. भारत में कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति का वर्णन करें और इसकी तुलना अन्य देशों के एक-दलीय प्रभुत्व से करें।

› पहले समझेंगे कि भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व कैसे स्थापित हुआ। यह 'लोकतांत्रिक' था, यानी मुक्त और निष्पक्ष चुनावों द्वारा जनता ने कांग्रेस को बार-बार चुना।

› फिर देखेंगे कि अन्य देशों में एक-दलीय प्रभुत्व कैसा होता है। जैसे चीन या सीरिया में संविधान ही एक पार्टी को अनुमति देता है।

› म्यांमार या बेलारूस जैसे देशों में सैन्य या कानूनी उपायों से एक पार्टी का दबदबा कायम किया जाता है।

› अब दोनों की तुलना करेंगे: भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व जनता की पसंद पर आधारित था, जबकि अन्य देशों में यह कानूनी, सैन्य या संवैधानिक मजबूरियों से था।

› उदाहरण के तौर पर, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद खत्म होने के बाद अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस का भी ऐसा ही लोकतांत्रिक दबदबा देखा गया, जैसा भारत में था।

उत्तर – भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व लोकतांत्रिक परिस्थितियों में, मुक्त और निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से प्राप्त हुआ था, जहाँ कई पार्टियों ने प्रतिस्पर्धा की। यह अन्य देशों जैसे चीन या म्यांमार के एक-दलीय प्रणालियों से भिन्न था जहाँ प्रभुत्व संवैधानिक प्रतिबंधों, कानूनी या सैन्य उपायों द्वारा स्थापित किया गया था।

उदाहरण 8. आज़ादी के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 'सतरंगे सामाजिक गठबंधन' क्यों कहा गया?

› पहला कदम: हमें समझना होगा 'सतरंगा' शब्द का मतलब क्या है। सतरंगा मतलब 'सात रंगों वाला', जो विविधता को दर्शाता है।

› दूसरा कदम: कांग्रेस में कौन-कौन शामिल थे? कांग्रेस ने किसानों, उद्योगपतियों, मज़दूरों, मालिकों, शहर के लोगों, गाँव के लोगों, निम्न, मध्य और उच्च वर्ग, हर जाति और हर धर्म के लोगों को अपने साथ जोड़ा।

› तीसरा कदम: कांग्रेस ने विभिन्न विचारधाराओं को भी अपने भीतर जगह दी। इसमें क्रांतिकारी, शांतिवादी, गरमपंथी, नरमपंथी, वामपंथी और दक्षिणपंथी, सभी तरह की सोच वाले नेता और समूह शामिल थे।

› चौथा कदम: ये सभी समूह और विचारधाराएँ मिलकर कांग्रेस को एक ऐसी पार्टी बनाते थे जो पूरे भारत की विविधता का प्रतिनिधित्व करती थी।

› पांचवां कदम: इसीलिए, समाज के हर कोने से अलग-अलग विचारों और वर्गों के लोगों को एक साथ लाने की वजह से, कांग्रेस को 'सतरंगे सामाजिक गठबंधन' कहा गया।

उत्तर – कांग्रेस को 'सतरंगे सामाजिक गठबंधन' इसलिए कहा गया क्योंकि इसने भारत के समाज की विविधता को अपने भीतर समाहित किया, जिसमें विभिन्न वर्ग, जातियाँ, धर्म और विचारधाराएँ एक साथ काम करती थीं।

उदाहरण 9. गुटों में तालमेल और सहनशीलता से कांग्रेस को क्या लाभ हुआ?

› पहला फायदा: कांग्रेस इतनी बड़ी पार्टी थी कि सभी विचारधाराओं और हितों को अपने अंदर समा लेती थी। जब किसी को कोई शिकायत होती, तो वह पार्टी के अंदर ही अपनी बात रख सकता था, बजाय इसके कि वह बाहर जाकर नई पार्टी बनाए।

› दूसरा फायदा: इससे कांग्रेस को अपनी नीतियों को संतुलित रखने में मदद मिली। कोई एक अतिवादी सोच हावी नहीं हो पाती थी, क्योंकि अंदर ही अंदर अलग-अलग गुट उसे संतुलित कर देते थे।

› तीसरा फायदा: पार्टी के भीतर ही आंतरिक लोकतंत्र बना रहता था। विभिन्न नेता और समूह अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते थे, लेकिन पार्टी की एकता बनी रहती थी।

› चौथा फायदा: विपक्ष को भी परेशानी होती थी। अगर विपक्ष कोई नई बात कहता, तो कांग्रेस उसे अपने अंदर ही जगह दे देती थी, जिससे विपक्ष के पास कहने को ज़्यादा कुछ बचता नहीं था।

उत्तर – गुटों में तालमेल और सहनशीलता के कारण कांग्रेस एक मजबूत और सर्व-समावेशी पार्टी बनी रही, जिसने लंबे समय तक देश की राजनीति पर प्रभुत्व बनाए रखा।

उदाहरण 10. सोशलिस्ट पार्टी की प्रमुख विचारधारा क्या थी और इसके दो प्रमुख नेता कौन थे?

› पहले याद करो कि सोशलिस्ट पार्टी किस तरह की व्यवस्था पर विश्वास करती थी।

› इन्हें वो समाजवादी व्यवस्था चाहिए थी जहाँ अमीर-गरीब का भेद कम हो, लेकिन तरीका लोकतांत्रिक हो, यानी चुनाव और जनता की भागीदारी से हो। तो विचारधारा 'लोकतांत्रिक समाजवाद' थी।

› अब नेताओं के नाम सोचो जिन्होंने इस सोच को आगे बढ़ाया। आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण इसके बहुत बड़े नेता थे।

› दोनों को जोड़कर उत्तर दो।

उत्तर – सोशलिस्ट पार्टी की प्रमुख विचारधारा 'लोकतांत्रिक समाजवाद' थी। इसके दो प्रमुख नेता आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण थे।

उदाहरण 11. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (CPI) के उद्भव और इसकी प्रमुख विशेषताओं को समझाइए।

› पहला कदम: CPI का उद्भव बोल्शेविक क्रांति (रूस) से प्रेरणा लेकर हुआ, जहां मज़दूरों और किसानों के अधिकारों को महत्व दिया गया।

› दूसरा कदम: इसकी प्रमुख विशेषता यह थी कि यह भारत में गरीबों, मज़दूरों और किसानों के हक़ के लिए लड़ने वाली पार्टी थी।

› तीसरा कदम: आज़ादी के बाद, इसने सरकार की कुछ नीतियों का विरोध किया और तेलंगाना जैसे क्षेत्रों में ज़मींदारी प्रथा के खिलाफ़ विद्रोह का समर्थन किया।

› चौथा कदम: 1964 में, यह पार्टी दो प्रमुख धड़ों में बँट गई – CPI और CPI-M – विचारधारात्मक मतभेदों के कारण।

उत्तर – कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (CPI) का उद्भव रूस की बोल्शेविक क्रांति से प्रेरित था, जिसका लक्ष्य भारत में मज़दूरों और किसानों के हक़ के लिए संघर्ष करना था। इसने तेलंगाना विद्रोह जैसे आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। 1964 में, विचारधारात्मक मतभेदों के कारण इसका CPI और CPI-M में विभाजन हो गया।

उदाहरण 12. भारतीय जनसंघ की स्थापना कब हुई और इसके संस्थापक कौन थे? इसकी मुख्य विचारधारा क्या थी?

› पहला चरण: जनसंघ की स्थापना 1951 में हुई थी।

› दूसरा चरण: इसके संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे।

› तीसरा चरण: इसकी मुख्य विचारधारा 'एक देश, एक संस्कृति, एक राष्ट्र' थी।

उत्तर – भारतीय जनसंघ की स्थापना 1951 में हुई थी और इसके संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे। इसकी मुख्य विचारधारा 'एक देश, एक संस्कृति, एक राष्ट्र' थी।

उदाहरण 13. शुरुआती दौर में कम सीटें होने के बावजूद विपक्षी दलों की क्या भूमिका थी?

› पहला कदम: सोचना कि अगर सिर्फ एक ही पार्टी हो, तो क्या होगा? कोई जवाबदेही नहीं होगी।

› दूसरा कदम: याद करना कि विपक्षी दलों ने सरकार की कमियां बताईं और नीतियों पर सवाल उठाए।

› तीसरा कदम: समझना कि इससे सरकार पर दबाव बना और उसे बेहतर काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

› चौथा कदम: यह भी समझना कि विपक्षी दलों ने भविष्य के लिए नए नेता तैयार किए, जो बाद में देश के बड़े नेता बने।

उत्तर – कम सीटें होने के बावजूद विपक्षी दलों ने लोकतंत्र को मजबूत रखा, सरकार की नीतियों की आलोचना की, वैकल्पिक नेतृत्व तैयार किया, और सरकार के भीतर शक्ति-संतुलन बनाने में मदद की।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में सीधे पूछा जाता है कि भारत के पहले आम चुनाव के सामने क्या चुनौतियाँ थीं, इसलिए इन बिंदुओं को अच्छे से समझ लो।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि चुनाव आयोग का गठन या पहले आम चुनाव की चुनौतियाँ। हालाँकि, मतदान के तीनों तरीकों का क्रम और उनका समयकाल याद रखना उपयोगी रहेगा।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर 'पहले आम चुनाव के महत्व' या 'इसे लोकतंत्र के लिए मील का पत्थर क्यों कहा जाता है' पर सीधे प्रश्न आते हैं। इसके सभी बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अनुच्छेद 356 का प्रयोग और उसके विवाद पर अक्सर प्रश्न आते हैं, इसलिए इसे विस्तार से समझें.

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में 'तुलनात्मक विश्लेषण' के रूप में अक्सर आता है। भारत के लोकतांत्रिक प्रभुत्व की तुलना अन्य देशों के अधिनायकवादी एक-दलीय प्रभुत्व से करना याद रखें।

• यह प्रश्न अक्सर सीधे 'कांग्रेस एक सतरंगे सामाजिक गठबंधन के रूप में' या 'कांग्रेस की प्रकृति' पर आता है। इस पर आपको विस्तार से लिखना होगा कि इसमें कौन-कौन से सामाजिक वर्ग और कौन-कौन सी विचारधाराएँ शामिल थीं। इसे अच्छे से तैयार करना, बेटा।

• CPI का उद्भव, तेलंगाना विद्रोह में इसकी भूमिका, और 1964 के विभाजन पर अक्सर प्रश्न आते हैं, खासकर दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों में।

• यह सवाल बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि शुरुआती वर्षों में विपक्षी दलों की भूमिका और महत्व पर टिप्पणी करें। इसे अच्छे से तैयार करना, बेटा।

एक नज़र में रिवीज़न

› पहला आम चुनाव (1951-52): चुनाव आयोग 1950 में बना, सुकुमार सेन मुख्य आयुक्त थे।
› मतदान के तरीके: अलग मतपेटी -> मुहर वाला मतपत्र -> EVM
› पहला आम चुनाव (1952): सार्वभौम मताधिकार, लोकतंत्र की विश्वव्यापी सफलता का प्रमाण।
› 1957 केरल: CPI लोकतांत्रिक जीत, 1959 केंद्र द्वारा विवादास्पद बर्खास्तगी (अनुच्छेद 356).
› कांग्रेस प्रभुत्व: लोकतांत्रिक, मुक्त चुनाव; चीन/क्यूबा से भिन्न।
› कांग्रेस: सामाजिक और विचारधारात्मक गठबंधन, विविधता का प्रतिनिधित्व।
› CPI: बोल्शेविक क्रांति से प्रेरित, मज़दूरों/किसानों का दल, 1964 में CPI/CPI-M विभाजन।
› विपक्षी दलों ने लोकतंत्र, सरकार की आलोचना, वैकल्पिक नेतृत्व को मजबूत किया।